विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,नई दिल्ली एवं

श्री सिध्देश्वर महाविद्यालय,माजलगांव

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

द्वि - दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"स्त्री-लेखन : सृजन के विविध आयाम"

तिथि ३० सितम्बर तथा ०१ अक्तुबर २०१३

संयोजक

हिन्दी विभाग

श्री सिध्देश्वर महाविद्यालय,माजलगांव

(कला,विज्ञान व वाणिज्य)

ता.माजलगांव जि.बीड ४३१ १३१

ISBN No. 978-1-62951-325-6

E-mail - siddheshwar.college@gmail.com

Website : www.siddheshwarcollege.com

ISBN No. 978-1-62951-325-6

केल्याने होत आहे रे । आधि केलेचि पाहिजे ।।

भारतीय शिक्षण प्रसारक संस्था अंबाजोगाई संचलित,

श्री सिध्देश्वर महाविद्यालय,माजलगांव

ता.माजलगांव ४ ३ १ १ ३ १ जि.बीड (महाराष्ट्र)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,नई दिल्ली एवं

श्री सिध्देश्वर महाविद्यालय,माजलगांव

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

द्वि - दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

"स्त्री-लेखन : सृजन के विविध आयाम"

दि.३० सितम्बर तथा ०१ अक्तुबर २०१३

"स्त्री-लेखन विशेषांक"

Scanned with OKEN Scanner

अ.क्र.	आलेख शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
१०१	उषा प्रियंवदा के उपन्यसों में व्यक्त नारी : सहेली रूप	प्रा.बिरादार श्रीदेवी बाबुराव	२७९
१०२	कृष्णा सोबती की ग्रामिण कहानियों में चित्रित नारी –	प्रा.शेख मुशताक अली शे.गुलाम रसुल	२८१
१०३	ममता कालिया के दौड उपन्यास में चित्रित नारी जीवन	प्रा.डॉ.सविता लालासो नाईक निंबाळकर	२८३
१०४	एक अमिट हस्ताक्षर, मन्नू भंडारी	प्रा.डॉ.विठठल तुळशीरामजी वजीर	२८५
१०५	तत्सम में नारी शोषण और संघर्ष	प्रा.मंगरूळे इसाबेग घुडूसाब	२८८
१०६	हिंन्दी कथा साहित्य में स्त्री लेखन	प्रा.कैलास माने प्रा.डॉ.दत्तात्रय अनारसे	२९१
१०७	साठोत्तरी हिन्दी कहानी में महिला लेखिकाएँ द्वारा वर्णित माँ की त्रासदी	प्रा.डॉ.रामकृष्ण बदने	२९४
१०८	हिन्दी उपन्यासों में नारी चेतना	प्रा.डॉ.रेखा शर्मा	२९६
१०९	हिन्दी साहित्य में स्त्री चित्रण के रूप	प्रा.यु.बी.देशमुख	२९९
११०	ग्रेस कुजूर एवं निर्मला पुतुल की कविताओं में व्यक्त आदिवासी स्त्री की व्यथा - कथा	तोंडाकुर लक्ष्मण पोतन्ना	३०१
१११	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री लेखन	शेख मोहसीन इब्राहीम	३०४
११२	हिंदी गद्य की अन्य विधाओं में स्त्री- लेखन पिंजर उपन्यास की अस्थिपंजर नारी	श्री पाटील नवनाथ सदू	३०७
११३	हिंदी बाल साहित्य विधा में स्त्री लेखन	सुश्री.छाया शंकर माळी	३०९
११४	दोहरा अभिशाप आत्मकथा में दलित नारी जीवन	मुरदारे सविता रावसाहेब	३१२
११५	हिंदी कहानी साहित्य नारी सृजन के विविध आयाम	डॉ.दिपक तुपे	३१४
११६	सठोत्तरी महिला लेखिका के उपन्यासों में स्त्री विमर्श	डॉ.विनायक शिंदे/अनंत वडघने	३१७
११७	उषा प्रियम्वदा के उपन्यासों में माँ रूप	पाटील श्रध्दा अशोकराव	३१९
११८	ठीकरे की मंगनी उपन्यास में नारी चेतना	साळुंके एस.बी.	३२४
११९	ममता कालिया के कहानी साहित्य में नारी चेतना	लिपारे अजित विठ्ठल	३२७
१२०	डॉ.सुशिला टाकभौरे की कहानीयोंका अनुशिलन	संतोष वसंत कोळेकर	३२९
१२१	स्त्रीवाद,स्त्रीविमर्श सिध्दांत एवं व्यवहार	कोळगिरे शंकर दत्तात्रय	३३२
१२२	एक कहानी यह भी : एक अनुशीलन	खिल्लारे दिपक नामदेव	३३५
१२३	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में स्त्री के विविध आयाम	जाधव अविनाश सुगंधराव	३३७
१२४	कोई बात नही उपन्यास में नारी चेतना	पवार अंकुश बाबुराव	३३९
१२५	तिरोहीत उपन्यास की नारी पात्र ललना	खाडे व्ही.बी.	३४१
१२६	हिंदी कविता में स्त्री लेखन	थायगुडे हनुमंत विठ्ठलराव	३४३
१२७	स्त्री विमर्श की अवधारणा और हिंदी साहित्य	चोरघडे सुर्यकांत मुकुंदराव	३४६
१२८	मालती जोशी की कहानीयों में नारी जीवन	शाम रामराव पवार	३५०
१२९	समकालीन कथा साहित्य में दाम्पत्त्य जीवन की समस्या	शेख खलील इमामसाब	३५२
१३०	शोषन से मुक्ति का प्रयास : छिन्नमस्ता	तावरे राजश्री	३५४
१३१	साहित्य में स्त्री लेखन	प्रा.किर्ती सर्जेराव काळे	३५७
१३२	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री लेखन	शिवाजी गंगाधर सुरवसे	३६०
१३३	हिंदी कथा साहित्य में स्त्री लेखन	नितीन रंगनाथ गायकवाड	३६३
१३४	शिकंजे का दर्द और आयदान में अभिव्यक्त.....	चिलवंत प्रकाश गोरोबा	३६५
१३५	हिंदी आत्मकथा विकास में महिला लेखिकाओं का योगदान	प्रा.जाधव राजाराम बाबासाहेब	३६७

Scanned with OKEN Scanner

नितीन रंगनाथ गायकवाड
शोधछात्र
ई-मेल :-
nitingaikwad७३@gmail.com
भ्रमणध्वनी :- ९४२१८७५३२९

१३२ हिंदी कथा साहित्य मे स्त्री लेखन

साहित्य में स्त्री विमर्श कें अंतर्गत स्त्री द्वारा लिख गया - और स्त्री कें विषय में लिखा गया साहित्य साहित्यीक स्त्री विमर्श माना जाता है ।

इसके मुल में अनुभव की प्रामाणिकता का तर्क दिया जाता है जो स्त्री विमर्श माना जाता है । तथा इसकें मुल में अनुभव कि स्त्री विमर्श कें सम्बन्ध में यह विवाद का विषय रहा है कि यह स्त्री कें लिए सुरक्षित क्षेत्र है । या लेखक होने कें नाते पुरुष की भागीदारी की संभावना भी याहाँ बमती है । इस मत को लेकर विरोधाभास की स्थिति है । महादेवी ने स्त्री प्रश्न को पुरुष के लिए नारीत्व का अनुमान है और नारी के लिए अनुभव अतः अपने जीवन का जैसा जीवन का जैसा सजीव चित्र वह हमे दे सकेगी, वैसे पुरुष बहुत साधना कें उपरान्त भी शायद ही दे सके ।

इंण्डिया टुडे की साहित्यीक वार्षिक - १९९७ में स्त्री लेखन में स्त्री के एकाधिकार पर काफि बहस हुई । यद्यापी उसमें पुरुष रचनाकारों की भागीदारी नही थी । फिर भी अधिकांश रचनाकारों ने स्वीकार किया है कि लेखन लेखन होता है, उसे बाँटकर देखने वाली दृष्टी पुर्वाग्रह सें ग्रस्त है ।[१]

स्त्री लेखन में स्त्री ही स्त्रीयों की समस्यों ओ तथा स्त्री होने कें नाते स्त्री ही स्वानुभुति पर आधारित प्रामाणिक व विश्वसनीय साहित्य की रचना कर सकती है । पुरुष लेखन संवेदना के स्तर पर, समानानुभुति के आधारपर इतनी प्रभावितता सें चित्रण करते समय नारी ही पुरी संवेदना से भरी और पुरी निष्टा के साथ साहित्य लिखती है ।

बीसवी शताब्दी कें उत्तरार्ध की हिन्दी लेखिकाएँ स्त्री विमर्श कें नाम पर जहाँ पुरुष समाज के विरुद्ध खडे नजर आते है वह स्वयं भी पुरुषवादी मानसीकता की शीकार होती जा रही है जो स्त्री विमर्श - विषय नही है । व्यापक अर्थ में स्त्री विमर्श -स्त्री जीवन कें अनुभव अनजाने पीडा जगत को व्यक्त करने का अवसर देता है । परन्तु उसका उद्देश्य स्थिती पर आँसु बहाना और यथास्थिती स्वीकार करना नही है । बल्की इसमे जीम्मेदार तथ्यों की खोज करना भी है ।

स्त्री मुक्ति का अर्थ पुरुष हो जाना नही है, क्यों की स्त्री की अपनी प्राकृतिक विशेषताएँ है, उसके साथ ही समाज द्वारा बनाए गए स्त्रीत्व कें बहाना सें मुक्ती कें साथ मनुष्यत्व की दिशा में कदम बढाना सही अर्थो मे स्वतंत्रता है । स्त्री को अपनी धारनाओं को बदलते हुए, जो भी घटित हुआ, असे नियती मानने की मानसिकता से उबरने की अवश्यकता है लेकिन साथ ही पुरुषवर्ग कों. ही दोषी मानकर कठघरे में खडे करनेवाली मनोवृत्ती बदलनी होगी । नारीयों के अधिकारों कें लिए लडनेवाले तथा आपने लेखन व प्रकाशन कें द्वारा स्त्री हित विदारलेवाले पुरुषों के अमुल्य योगदान को विस्मृत नही किया जा सकता ।

नारी प्रगती की दृष्टी सें सन १९७५ कें बाद का समय अधिक महत्वपुर्ण माना जाता है । इस समय स्त्री -जाती पुराणे परंपराओं रिवाजो सें स्त्री का जीवन पीडीत दिखाई देता है । इस समय के बाद स्त्रीयों के जीवन में बदलाव आया । समय कें साथ -साथ पुरुष के साथ स्त्रियों को भी घर की चार दिवारो के बाहर कदम रखने का अवसर मिला जिसमें म. फुले शाहु, अम्बेडकर, सावित्राबाई फुले जैसे समाज सेवको ने स्त्री शिक्षा पर ध्यान देकर नारियों के जिवन में बदलाव लाया । और स्त्री पुरुषों के कदमों - सें -कदम चलने के काबिल बनी । इसका एक महत्वपुर्ण कारण यह था की समाजपरिवर्तन करने का काम महिला साहित्याकारों ने भी किया । उस समय का साहित्य की समाज परिवर्तन का कारण बना ।

महिला लेखन का महत्व प्रतिपादीत करते हुए लेखिका - प्रभा खेतान का कहना है की, अनुभवों की अभिव्यक्ती कुछ विशेष और अलग रंगो की और रेखाओं की पहचान है । कम -से -कम कुछ तो ऐसा अखोजा रहा है, जिसे केवल औरत ही खोज सकती है कुछ तो ऐसा होंगा जो बिल्कुल स्त्रीयों का निजी सच होगा, उनका अपना भोगा हुआ, जीया हुआ सच । स्त्री लेखन में और पुरुष लेखन में फर्क होता है, और रहेगा क्यों की स्त्री और पुरुष आज भी पितीसत्ताक समाज में जैविक, आर्थिक, सामाजिक धरातल पर भिन्न है ।

Scanned with OKEN Scanner

महिलाओद्वारा अपन्यास लेखन का अरम्भ १९ वी सदी के अंतिम दशक में हुआ । तब से लेकर स्वातंत्र्योत्तर काव्य में सातवे दशक तक महिला उपन्यास कारों की सृजन प्रक्रिया अपेक्षाकृत नही चली, इसके बाद बहोत सारी लेखिकाओं ने उपन्यास लेखन क्षेत्र में प्रवेश किया ।

महिला लेखन की शुरुवात कविता लेखन से हुई । जो अधिकतर राष्ट्रीय भावना में मुक्त थी । उन्हीसे कविता की भाषा को भावाभिव्यक्ति का सरल माध्यम माना है । कविता के माध्यम से स्त्री समाज कों कवायित्री सम्बोधीत करते हुए संदेश देती है ।

देवियों, क्या पतन अपना देखकर,
नेत्र से आँसु निकलतें हैं, नही ?

हिन्दी कें साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं में भी कविता में स्त्री चेतना तथा नारी सें संघर्ष का जोशपुर्ण सुनाई देता है । कविता में व्यक्त संवेदना की अपेक्षा स्त्री चेतना की कथा साहित्य में व्यापकता मिलती है । यद्यपी कथा लेखन की शुरुवात देर से हुई, किन्तु शुरु होने के बाद स्त्री चर्चा के केंद्र में निरन्तर रही है जैसे की मराठी साहित्य में विभावरी शिरुरकर इनका नाम प्रसिद्ध है, इन्होंने नारियों के विभीन्न समस्याओं तथा उनसे जुडी अनेक समस्याओं का चित्रण मराठी साहित्य में किया है । हिन्दी साहित्य में आज काफी स्त्री लेखीकाए दिखाई देती है । स्पष्ट है की आधुनिक साहित्य में स्त्री विमर्श अधिक चर्चित विषय रहा है ।

बीसवी शताब्दी कें बाद महिला साहित्यकारों ने उपन्यास में नारि कें प्रति उसकी विभिन्न समस्याएँ, संघर्ष, चेतनाशिलता भारतीय नारी का अपनी रचनाओं में चित्रण किया है ।

जिसमे शिवानी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियवंदा, मन्नु भंडारी, शषीप्रभा, मेहरु नीसा, ममता कालीया, कृष्णा अग्नीहोत्री, मृदुला गर्ग, मंजतुल भगत, निरुपमा सोबती, कुसूम असल, दिप्ती खंडेलवाल, राजी सेठ, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, ऋतु शुक्ला, मैत्रेयी पुष्पा, अलका सरावगी, चंद्र कान्ता, इसतरह से साहित्य में अनेक नाम -जुडे चले गए ।

एक नारी समाज की नारी समस्याओं को जीतनी अच्छे ढंग से प्रस्तुत कर सकती है, शायद पुरुष नही । यही कारण है-की इन लेखिकाओ को अपनी परिवेश को रुपांतरीत करने में बहुत सफलता मिली है । कृष्णा सोबती के बाद उषा प्रियवंदा कें उपन्यासो में नारी विमर्श देखे जा सकते है । इनके उपन्यास आधुनिक नारी जिवन की विसंगतीयों का चित्रण करके बदलती परिस्थितीयों में नारी के बदलते रुप तथा व्यक्तिगत विवशता एवं सामाजिक स्थिती एक स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्थापना के परिचायक है ।

हिन्दी की प्रसिद्ध लेखिका मृदुला गर्ग इन्होंने अपनी बोल्ड लेखनी के द्वारा अपनी अलग पहचान बनाई है । कठगुलाब (१९९६) कें उपन्यास में स्त्री -पुरुष संबंधो के विषय में कथ्य है, इसके अधिकांश प्रमुख पात्र (स्मिता, मारिया, असीमा, नर्मदा और निरजा) आदी स्त्रीया है, शायद इसलिए की कथा में स्त्री अंर्तसंबंध और अधिक जटील एवं दिलचस्प हो उठते है । इस तरह कर कई महिला रचनाए मिलती है -जीनमें साहित्यकारों ने नारी के जीवणोंपर लिखा है । ५

सारांश :

हिन्दी साहित्य में स्त्रीयों के विभीन्न समस्याओं का चित्रण महिला साहित्यकारों कें विभीन्न विधाओं में अर्थात उपन्यास, कथा, काव्य तथा लेखों के माध्यम से आज नारी की विभिन्न समस्याओं का स्त्री-विमर्श का चित्रण पढने को मिलता है । साहित्य के माध्यम सें महिलाओं की सुरक्षितता कें लिए तथा - महिलाओं के विकास कें लिए हिन्दी साहित्य का बडा महत्वपुर्ण योगदान रहा है ।

संदर्भ :-

१) इंटरनेट वेबसाईट
२) अरविंद जैन, औरत अस्तित्व और अस्मिता, प्रभा खेतान - पृ २५-२६
३) डॉ.प्रमिला कपुर, कामकाजी नारी पृ.स.१३
४) समीक्षा (त्रैमासिक), अप्रैल -जुन १९९६ प्र.८
५) महादेवी वर्मा, शृंखला की कडियाँ पृ.स.२३

Scanned with OKEN Scanner